

डा. बी.आर.अम्बेडकर का जीवन वृत्त

बाबा साहेब के रूप में लोकप्रिय डा. बी.आर.अम्बेडकर भारतीय संविधान के निर्माताओं में से एक हैं। आप एक जानेमाने राजनेता और एक विख्यात न्यायविद हैं। अस्पृश्यता और जातिगत भेदभाव जैसी सामाजिक बुराइयों को दूर करने के अम्बेडकर के प्रयास उल्लेखनीय थे। अपने जीवन काल में इस नेता ने दलितों और सामाजिक रूप से पिछड़े वर्गों के अधिकारों के लिए लड़ाई लड़ी। स्वतंत्रता के बाद इन्हें मंत्रिमंडल में राष्ट्र के प्रथम विधि मंत्री नियुक्त किया गया था। इन्हें 1990 में मरणोपरांत भारत के सर्वश्रेष्ठ सिविल सम्मान भारत रत्न प्रदान किया गया था।

जीवन

डा. बी.आर.अम्बेडकर का जन्म 14 अप्रैल 1891 में मध्य प्रदेश के मऊ में हुआ था। इनके पिता की 1894 में सेवानिवृत्ति के पश्चात् इनका परिवार सतारा चला गया। 4 वर्ष के बाद ये बंबई चले गए जहां 1908 में इन्होंने अपनी मैट्रिक की परीक्षा पास की। बाबा साहेब ने जातिगत भेदभाव के विरुद्ध संघर्ष किया। 1908 में अम्बेडकर को एलफिनस्टोन कालेज में पढ़ने का अवसर प्राप्त हुआ। सभी परीक्षाओं को सफलतापूर्वक पास करने के साथ-साथ अम्बेडकर ने बड़ोदा के गायकवाड़ शासक शाहजी राव III से 25 रुपए प्रतिमाह की छात्रवृत्ति भी प्राप्त की। 1912 में बंबई विश्वविद्यालय से राजनीति विज्ञान और अर्थशास्त्र में स्नातक परीक्षा पास की। अम्बेडकर ने इस धनराशि का उपयोग यूएसए में उच्चतर अध्ययन के लिए करने का निर्णय लिया।

आगे की शिक्षा

1913 में आप अमेरिका चले गए। आपको न्यूयार्क सिटी के कोलंबिया विश्वविद्यालय में स्नातकोत्तर शिक्षा के लिए 3 वर्ष की बड़ोदा राज्य छात्रवृत्ति प्राप्त हुई। मुख्य विषय के रूप में अर्थशास्त्र तथा अन्य विषयों के रूप में समाज शास्त्र, इतिहास, दर्शनशास्त्र और मानव शास्त्र से जून 1915 में एम.ए. की परीक्षा पास की। उन्होंने 'एंशियंट इण्डियन कामर्स' विषय पर एक थीसिस प्रस्तुत किया था।

1916 में आपने दूसरी एम.ए. के लिए अपना दूसरा थीसिस, "नेशनल डिवीडेंड आफ इण्डिया-ए हिस्टोरिक एण्ड एनालिटिकल स्टडी" पूर्ण की तथा अंततः अपनी तीसरी थीसिस के लिए 1927 में अर्थशास्त्र में पीएच.डी. की डिग्री प्राप्त की तथा इसके बाद आप लंदन चले

गए। 9 मई को मानवशास्त्री एलेगजेंडर गोल्डनवाईजर द्वारा आयोजित एक सेमिनार के समक्ष अपना लेख - 'कास्टस इन इंडिया: देयर मेकेनिज्म, जेनिसिस और डेवलपमेंट' पढ़ा।

अक्टूबर, 2016 में उन्होंने ग्रेज-इन में कानूनी पाठ्यक्रम के लिए नामांकन कराया साथ ही लंदन स्कूल ऑफ इकोनामिक्स में भी दाखिला ले लिया था। 1921 में स्नातकोत्तर डिग्री पूरी की। उनकी थीसिस "द प्राबलम ऑफ द रूपी: इट्स ओरिजन एंड इट्स सोल्यूशन" विषय पर था। 1923 में अर्थशास्त्र में डॉक्टरेट पूरा किया।

दलितों के लिए अभियान

भीमराव दलितों, महिलाओं और निर्धनों के मसीहा थे तथा आप जीवन भर इनके लिए लड़ते रहे। 1923 में आपने 'बहिष्कृत हितकारिणी सभा' (आउटकास्ट वेलफेयर एसोसिएशन) की स्थापना की, जो दलितों में शिक्षा और संस्कृति का प्रचार-प्रसार करने, आर्थिक स्थिति सुधारने तथा उपयुक्त मंच पर उनकी समस्याओं को उठाने और इनका समाधान खोजने को समर्पित थी। दलितों की समस्याएं सदियों पुरानी थी तथा इनको दूर करना कठिन कार्य था। मंदिरों में इनका प्रवेश प्रतिबंधित था। ये सार्वजनिक कुओं और तलाबों से पानी नहीं भर सकते थे। स्कूलों में इनका प्रवेश प्रतिबंधित था। 1927 में आपने बंबई के पास कोलाबा के चोवडर टैंक से सार्वजनिक कुओं से पानी भरने का अधिकार देने के लिए महाद मार्च की अगुवाई की। अम्बेडकर ने आम जनता तक पहुंचने के तरीके ढूंढने शुरू किए ताकि उन्हें प्रचलित सामाजिक कुरीतियों की बुराईयों के बारे में समझाया जा सके। उन्होंने एक समाचारपत्र 'मूक नायक (शांति के नेता) की भी शुरुआत की।

संविधान के जनक

डा. अम्बेडकर को संविधान प्रारूप समिति का अध्यक्ष नियुक्त किया गया था। आप प्रसिद्ध विद्वान और प्रख्यात कानून विद् भी थे। अम्बेडकर ने समाज के विभिन्न वर्गों को जोड़ने पर बल दिया। उनके अनुसार, देश की एकता को बनाए रखना कठिन होगा यदि विभिन्न वर्गों के बीच भेदभाव को दूर नहीं किया जाता है। आपको संविधान के निर्माता के रूप में भी जाना जाता है। संविधान को तैयार करने में उनकी कठिन परिश्रम के कारण ही संविधान दलितों के सामाजिक और आर्थिक सशक्तिकरण के लिए महत्वपूर्ण बन पाया है, जो प्रशंसनीय है। डा. अम्बेडकर ने आश्वासन दिया था कि सरकार के लोकतांत्रिक प्रणाली में उपयुक्त नियंत्रण एवं समन्वय है तथा कार्यकारी, विधायी और न्यायपालिका की त्रि-शाखाएं एक दूसरे के प्रति एवं राष्ट्र के प्रति उत्तरदायी रहते हुए भी स्वतंत्र रूप से कार्य करती हैं।

लेखन

डा. अम्बेडकर एक पारंगत लेखक थे। उन्होंने भारत में सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक पहलुओं और विश्व पर कई पुस्तकें, थीसिस और लेख लिखे। डा; अम्बेडकर के मुख्य लेखन में अछूत और अस्पृश्यता, द इवोल्यूशन ऑफ प्रोविंशियल फाइनेंस इन ब्रिटिश इंडिया, द अनाइअलेशन आफ कास्ट, द बुद्धा एंड हिज धम्म, कास्ट इन इंडिया: देयर मेकेनिज्म, जेनिसिस डेवलपमेंट तथा 11 अन्य निबंध फिलोसफी ऑफ हिंदूज्म आदि पर लिखे। उन्होंने 'द बुद्धा और कार्ल मार्क्स' पर किताब भी लिखी।

महापरिनिर्वाण

अपनी किताब 'बुद्धा एंड हिज धम्म' का लेखन कार्य समाप्त करने के तीन दिन के पश्चात् 6 दिसंबर 1956 को दिल्ली स्थित अपने घर में आखिरी सांस ली। चूंकि अम्बेडकर ने बौद्ध धर्म अपना लिया था इसलिए बौद्ध धर्म के अनुसार ही उनका अंतिम संस्कार किया गया था। इस समारोह में उनके करोड़ों समर्थकों, कार्यकर्ताओं और प्रशंसकों ने भाग लिया था।

निष्कर्ष

डा. अम्बेडकर के विचार और आदर्श आज के उभरते भारत के संदर्भ में भी अति प्रासंगिक है जो मजबूत अर्थव्यवस्था, औद्योगिक विविधता एवं कौशल विकास, महिला सशक्तिकरण के लिए तथा समाज के सामाजिक रूप से संवेदनशील वर्गों को एक समान अवसर की गारंटी प्रदान करता है।